www.krishipravahika.vitalbiotech.org

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2023) वर्ष 3, अंक 1, 4-6

Article ID: 245

अरहर की खेती

राम प्रकाश*, राजेश कुमार**

*शोध छात्र, **सहायक प्राध्यापक

शस्य विज्ञान विभाग

आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं

प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय,

कुमारगंज, अयोध्या (उत्तर प्रदेश)

यह पूर्व उत्तरी भारत के दलहन की मुख्य फसल है। पूर्वी उत्तरप्रदेश में तो दाल माने अरहर की दाल। अरहर की दाल को तुअर भी कहा जाता है। अरहर की दाल को दलहनी फसलो में प्रथम स्थान दिया है यह फसल विशेष रूप से अच्छी होती है। यह बहुधा वर्षा ऋतु के आरंभ में और खरीफ की फसलों के साथ मिलाकर बोई जाती है। दलहनी फसलों में हमारे प्रदेश में चने के बाद अरहर का स्थान है । यह फसल अकेली तथा दूसरी फसलो के साथ भी बोई जाती है। ज्वार, बाजरा, उर्द और कपास अरहर के साथ बोई जाने वाली प्रमुख फसलें है। सघन पद्घतियों को अपनाकर इसे और बढ़ाया जा सकता है। अधिक उपज के लिए वैज्ञानिक विधियों बीज उपचार साथ में बुबाई करने का सही उपयोग करें।

खेत की तैयारी

अरहर की खेती के लिए दोमट भूमि बेहतर मानी जाती हैं। जानकारी के लिए बता दे की अरहर की फसल खड़े पानी को सह नहीं सकती तो ऐसे में खेत में जल निकासी की व्यवस्था होनी चाहिए। फसल उगाने से पहले 2 से 3 बार खेत में हल के माध्यम से बुआई जुताई करनी होती हैं और जमीन को समतल करना होता हैं। इसके अलावा बेहतरीन उच्च गुणवत्ता वाली फसल के लिए जमीन खरपतवार मुक्त होनी चाहिए। खेत खरपतवार से मुक्त हो तथा उसमें जल निकासी की उचित व्यवस्था की जावे। अरहर की फसल के लिए समुचित जल निकासी वाली हो।

अरहर की उन्नत प्रजातियां जैसे-

RVICPH 2671: ये पहली सीएमएस आधारित भूरी अरहर की शंकर किस्म है। इसकी फसल अवधि 164 से 184 दिनों की होती है , इस किस्म की दाल में प्रोटीन की मात्रा 24.7 % होती है, इसकी औसत उपज 22 से 28 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होती हैं।

पूसा 9: इस किस्म की अवधि 260 से 270 दिनों की होती हैं, जिसकी बुआई जुलाई से सिंतम्बर तक की जाती है इसकी औसत उपज 25 से 30 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होती है।

JKM 189: अरहर की इस किस्म में हरी फलिया व काली धारियों के साथ लाल व भूरा बड़ा दाना होता है। ये किस्म देर से बुवाई के लिए भी उपयुक्त हैं।

इसकी औसत उपज 20 से 22 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है।

पूसा अगेती: अरहर की इस किस्म में फसल की लंबाई छोटी व दाना मोटा होता हैं। यह किस्म 150 से 160 दिनों में पक जाती है व कटाई के लिए तैयार हो जाती है। इसकी औसत उपज 1 टन प्रति हेक्टेयर होती है।

ICPL 87: इस किस्म में फसल की लंबाई छोटी होती हैं, सामान्यत: इसकी ऊंचाई 90 से 100 सेन्टीमीटर की होती है। इसकी अवधि 140 से 150 की होती हैं। अरहर की इस किस्म में फलियां मोटी एवं लम्बी होती हैं और गुच्छों में आती हैं तथा एक साथ पकती हैं। औसत उपज 15 से 20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होती हैं।

उपस (UPAS) 120: ये किस्म उत्तर प्रदेश के सभी क्षेत्रों में लगाने के लिए उपयुक्त है। यह किस्म 130 से 140 दिनों में पक जाती है और कटाई के लिए तैयार हो जाती है। अरहर की इस किस्म में फसल मध्यम लंबाई की होती है। इसके बीज छोटे और हल्के भूरे रंग के होते हैं। इस किस्म की औसतन उपज 6 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होती हैं।

TJT 501: ये किस्म मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, गुजरात, महाराष्ट्र, राजस्थान और उत्तर प्रदेश में बुवाई के लिए उपयुक्त है। यह किस्म 145 से 155 दिन में पक जाती है और कटाई के लिए तैयार हो जाती हैं। इसकी औसत उपज 18 से 20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की हैं।

ICPL 151: इस किस्म की खास बात ये है कि ये 125 से 135 दिन की शीघ्र पकने वाली किस्म है। इसका दाना बड़ा व हल्के पीले रंग का होता है। इसकी औसत पैदावार 18 से 20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक की होती है।

ICPL 88039: इसकी अवधि 140 से 150 दिन की होती है। इसका दाना भूरे रंग का होता है। इसके फसल की ऊंचाई 210 से 225 सेंटीमीटर तक होती है। इसकी औसत उपज 16 से 18 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक की होती है।

बहार: अरहर कि ये किस्म 230 से 250 दिन में पक कर कटाई के लिए तैयार हो जाती है। इसकी औसत उपज 30 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक की होती है।

आईपीए 203: इस किस्म की खास बात ये है कि इस किस्म में बीमारियां नहीं लगतीं और इस किस्म की बुवाई करके फसल को कई रोगों से बचाया जा सकता हैं साथ में अधिक पैदावार भी प्राप्त कर सकते हैं। इसकी औसत उपज 18 से 20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक की होती है। इस किस्म की अरहर की बुवाई जून महीने में कर देनी चाहिए।

पूसा16: यह किस्म शीघ्र पकने वाली है, इसकी अवधि 120 दिन की होती हैं। इस फसल में छोटे आकार का पौधा 95 सेमी से 120 सेमी लंबा होता है। इस किस्म की औसत उपज 20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक है।

RVA19: इस किस्म का उपयोग समानतय: तमिलनाडु, तेलंगाना और आंध्र प्रदेश में किया जाता हैं। इस किस्म की खेती से 15 प्रतिशत अधिक उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है।

बीज और बुवाई

अगर इस देसी अरहर का बीज किसान सीधे खेत में बोते हैं तो पहली बारिश में जून के आख़िरी सप्ताह या जुलाई के पहले सप्ताह में बो सकते हैं। अगर इसकी नर्सरी लगाकर बुवाई करनी है।

अरहर की खेती में कम दिनों में पकने वाली किस्म का बीज 12 से 15 किलोग्राम प्रति एकड़ तक डाले। अरहर की खेती में मध्यम समय में पकने वाली किस्म का बीज 6 से 7 किलोग्राम प्रति एकड़ तक डाले।

सिंचाई

अरहर की खेती में ज्यादा सिंचाई की जरुरत नहीं पड़ती। जब पौधा फूल देने लग जाएं एक सिंचाई तब और एक सिंचाई फलिया आने के समय करना होता हैं बिजाई से 3-4 सप्ताह बाद पहली सिंचाई करें और बाकी की सिंचाई वर्षा के अनुसार करें । फूल निकलने और फलीयां बनने के समय सिंचाई बहुत ज़रूरी है। ज्यादा पानी देने से भी पौधे की वृद्धि ज्यादा होती है और झुलस रोग भी ज्यादा आता है। आधे सितंबर के बाद सिंचाई ना करें ।

खाद

नाइट्रोजन 30 किलो (60 किलो यूरिया), फासफोरस 40 किलो और पोटाश 40 किलो की मात्रा प्रति एकड़ में प्रयोग करें। यह सारी खादें बिजाई के समय आवश्यकतानुसार डालें। मिट्टी की जांच के आधार पर खादों का प्रयोग करें। यदि मिट्टी में पोटाश्यिम की कमी लगे तो पोटाश का प्रयोग करें। यदि डी ए पी का प्रयोग किया है तो नाइट्रोजन का प्रयोग ना करें ।

खरपतवार नियंत्रण

अरहर की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए 20 से 25 दिन में पहली निंराई करे तथा फसल में फूल आने के पहले दूसरी निंराई करें। खरपतवार नियंत्रण रासायनिक विधि से करने के लिए पेन्डीमेथीलिन 2 लीटर प्रति हेक्टेयर में 150 से 200 लीटर पानी में मिलाकर बुवाई के 2 से 5 दिन के बाद डालें।

बिजाई से 3 सप्ताह बाद पहली और 6 सप्ताह बाद दूसरी गोडाई करें । नदीनों के लिए पैंडीमैथालीन 2 ली. प्रति एकड. 150- 200 ली. पानी में बिजाई से 2 दिन बाद डालें ।

अरहर फसल की कटाई व भंडारण

अरहर की फसल में जब पत्तियां गिरने लग जाय और 80% फलिया भूरे रंग की हो जाए, तब फसल को काटना चाहिए एवं अरहर का बीज जो अच्छी तरह से सूख जाए तभी उनका भंडारण करना चाहिएं।

उत्पादन

अरहर की उन्नत विधि से खेती करने पर 15 से 20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर दाना एवं 50 से 60 क्विंटल लकड़ी प्राप्त होती है।